पू. श्री मोरारीबापु की कथा में आती हुई
स्तुति, आरती, हनुमान चालीसा और सुवाक्य के साथ
गणेश, विष्णु, श्रीकृष्ण, जगदीश्वर, शालिग्राम, शिव,
हनुमान, सूर्य, श्रीदत्त, श्रीबदरीनाथ, श्रीराणी सती दादी
आदि अनेक स्तुतियाँ का समावेश किया गया है।

साथ में तुलसीदास कबीर, ब्रह्मानंद, मीरा, सुरदास
आदि के अनेकविध लोकप्रिय

स्तुति-भजन

संकलन : श्री हरीशभाई वरन

मूल्य : रु. ५-००

: प्रकाशक :

सस्तु पुस्तक भंडार

लक्ष्मी सिनेमा की गली में,
स्टेशन रोड, नडियाद (गुज.)
फोन : ओ. २३२५८ घर : ३६४४३

भट्ठी की बारी में,
गांधी रोड पुल के नीचे,
अहमदआबाद-१ फोन : ३१००६२

भजनावली

तेरे पूजन को भगवान

तेरे पूजन को भगवान, बना मन मन्दिर आलीशान ।
किसने जानी तेरी माया, किसने भेद तुम्हारा पाया ।
हारे ऋषि-मुनी धर ध्यान, बना मन मन्दिर आलीशान ॥

तू ही जल में, तू ही थल में, तू ही मन में, तू ही बन में ।
तेरा रूप अनूप महान, बना मन मन्दिर आलीशान ॥

तू हर गुल में, तू बुलबुल में, तू हर डाल के हर पातन में ।
तू हर दिल में मूरतिमान, बना मन मन्दिर आलीशान ॥

तूने राजा रंक बनाये, तूने भिक्षुक राजा बैठाये ।
तेरी लीला परम महान, बना मन मन्दिर आलीशान ॥

झूठे जग की झूठी माया, मूरख इसमें क्यों भरमाया ।
कर कुछ जीवन का कल्यान, बना मन मन्दिर आलीशान ॥

सब दिन होत न एक समान

सब दिन होत न एक समान

एक दिन राजा हरिचंद्र गृह, संपत्ति मेरु समान ।
एक दिन जाय स्वपय गृहसेवत, अंबर हरत मसान ॥ सब०

एक दिन दूलह बनत बराती, चहुँ दिशि गढत निसान ।
एक दिन डेरा होत जंगल में, कर सूंघे पगतान ॥ सब०

एक दिन सीता रुदन करत है, महा बिपिन उद्यान ।
एक रामचंद्र मिली दोउ, विचरत पुष्प विमान ॥ सब०

श्रीराम-स्तुति

लोकाभिरामं रणरंगधीरं, राजीवनेत्रं रघुवंशनाथम् ।
कारुण्यरूपं करुणाकरंतं, श्रीरामचंद्र शरणं प्रपद्ये ॥
मनोजवं मारुततुल्यवेगं, जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥
राजीव नैन धरे धनुसायक । भक्त बिपति भंजन सुखदायक
मंगलभवन अमंगल हारी । द्रवउ सो दशरथ अजिर बिहारी
जनकसुता, जगजननी जानकी । अतिशय प्रिय करुणानिधानकी
ताके जुगपद कमल मनावउँ । जासु कृपा निरमल मति पावउँ
महाबीर बिनवउँ हनुमाना । राम जासु जस आप बखाना
प्रनवउँ पवनकुमार, खलबन पावक, ज्ञान धन ।
जासु हृदय आगार, बसहिं राम शर चापधर ॥
कुंद इन्दु सम देह, उमा रमन करुणा अयन ।
जाहि दीन पर नेह, करहुँ कृपा मर्दन मयन ॥
सियाराममय सब जग जानी । करउं प्रनाम जोरि जुग पानी

श्रीराम स्तवन

श्रीरामचन्द्र कृपालु, भज मन हरण भवभय दारुणं ।
नवकंज-लोचन, कंज-मुख, कर-कंज, पद कंजारुणं ॥
कंदर्प अगणित अमित छबि, नवनील-नीरद सुन्दरं ।
पट पीत मानहु तड़ित रुचि शुचि नौमि जनक सुतावरं ॥
सिर मुकुट कुंडल तिलक चारु उदारु अंग विभूषणं ।
आजानुभुज शर-चाप-धरं, संग्राम-जित-खरदूषणं ॥
भज दीनबंधु दिनेश दानव-दैत्यवंश-निकंदनं ।
रघुनंद आनंदकंद कोशलचंद दशरथ-नंदन ॥

इति वदति तुलसीदास शंकर–शेष–मुनि मनरंजन ।
मम हृदय–कंज निवास कुरु, कामादि खल–दल–गंजनं ॥
मनु जाहिं राचेउ मिलिहि सो बरु सहज सुन्दर साँवरो ।
करुना निधान सुजान सीलु सनेहु, जानत रावरो ॥
ऐहि भाँति गौरि असीस सुनि सिय सहित हियँ हरषीं अली ।
तुलसी भवानिहि पूजि पुनि पुनि मुदित मन मन्दिर चली ॥
(सो०)–जानि गौरि अनुकूल, सिय हिय हरषु न जाइ कहि ।
मंजुल मंगल मूल, बाम अंग फरकन लगे ॥

गणेश–स्तुति

गजाननं भूतगणाधिसेवितं, कपित्थजम्बूफलचारुभक्षणम् ।
उमासुतं शोकविनाशकारकं, नमामि विघ्नेश्वरपादपंकजम् ॥

नमामि देवं सकलार्थदन्तं, सुवर्णवर्णं भुजगोपवीतम् ।
गजाननं भास्करमेकदन्तं लम्बोदरं वारिभवासनञ्च ॥

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः ।
लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः ॥

धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः ।
द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि ॥

विद्यारंभे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा ।
संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते ॥

द्वादशैतानि नामानि त्रिसन्ध्यं यः पठेन्नरः ।
नहि विघ्नभयं तस्य सर्वसिद्धिकरं परम् ॥

विद्यार्थी लभते विद्यां धनार्थी लभते धनम् ।
पुत्रार्थी लभते पुत्रं मोक्षार्थी मोक्षमाप्नुयात् ॥

जपेद् गणपतिस्तोत्रं षड्भिर्मासैः फलं लभेत् ।
संवत्सरेण सिद्धिं च लभते नात्र संशयः ॥

हनुमान चालीसा

(दोहा)

श्रीगुरु चरन सरोज रज निज मनु मुकुरु सुधारि ।
वरनऊँ रघुवर विमल जसु जो दायकु फल चारि ॥

वुद्धि हीन तनु जानिके, समिरौ पवन-कुमार ।
वल वुद्धि विद्या देहु मोहि, हरहु कंलेश विकार ॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुण सागर । जय कपीस तिहु लोक उजागर ॥
राम दूत अतुलित बल धामा । अंजनि-पुत्र पवनसुत नामा ॥
महाबीर विक्रम बजरंगी । कुमति निवार सुमति के संगी ॥
कंचन बरन बिराज सुबेसा । कानन कुंडल कुंचित केसा ॥
हाथ बज्र और ध्वजा बिराजै । काँधे मूँज जनेऊ साजै ॥
संकर सुवन केसरी नंदन । तेज प्रताप महा जग बंदन ॥
बिद्यावान गुनी अति चातुर । राम काज करिबे को आतुर ॥
प्रभु चरित्र सुनिबे को रसिया । राम लखन सीता मन बसिया ॥
सूक्ष्म रूप धरि सियहिं दिखावा । बिकट रूप धरि लंक जरावा ॥
भीम रूप धरि असुर संहारे । रामचंद्र के काज संवारे ॥
लाय सजीवन लखन जियाये । श्रीरघुबीर हरषि उर लाये ॥
रघुपति कीन्हीं बहुत बड़ाई । तुम मम प्रिय भरतहि सम भाई ॥
सहस बदन तुम्हरो जस गावैं । अस कहि श्रीपति कंठ लगावैं ॥
सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा । नारद सारद सहित अहीसा ॥
जम कुबेर दिगपाल जहाँ ते । कबि कोबिद कहि सके कहाँ ते ॥
तुम उपकार सुग्रीवहिं कीन्हा । राम मिलाय राज पद दीन्हा ॥
तुम्हारो मन्त्र बिभीषन माना । लंकेश्वर भए अब जग जाना ॥

जुग सहस्त्र जोजन पर भानू। लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥
प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं। जलधि लाँघि गये अचरज नाहीं॥
दुर्गम काज जगत के जे ते। सुगम अनुग्रह तुम्हरे ते ते॥
राम दुआरे तुम रखवारे। होत न आज्ञा बिनु पैसारे॥
सब सुख लहै तुम्हारी सरना। तु रच्छक काहू को डरना॥
आपन तेज सम्हारो आपै। तीनों लोक हाँक ते काँपै॥
भूत पिसाच निकट नहिं आवै। महाबीर जब नाव सुनावै॥
नासै रोग हरै सब पीरा। जपत निरंतर हनुमंत बीरा॥
संकट ते हनुमान छुड़ावै। मन क्रम बचन ध्यान जो लावै॥
सब पर राम तपस्वी राजा। तिन के काज सकल तुम साजा॥
और मनोरथ जो कोई लावै। सोई अमित जीवन फल पावै॥
चारों जुग परताप तुम्हारा। है परसिद्ध जगत उजियारा॥
साधु संत के तुम रखवारे। असुर निकंदन राम दुलारे॥
अष्ट सिद्धि नौ निधि के दाता। अस बर दीन जानकी माता॥
राम रसायन तुम्हरे पासा। सदा रहो रघुपति के दासा॥
तुम्हरे भजन राम को पावै। जनम जनम के दुख बिसरावै॥
अंत काल रघुबर पुर जाई। जहाँ जन्म हरि-भक्त कहाई॥
और देवता चित न धरई। हनुमंत सेई सर्व सुख करई॥
संकट कटै मिटै सब पीरा। जो सुमिरै हनुमंत बलबीरा॥
जै जै जै हनुमान गोसाई। कृपा करहु गुरु देव की नाई॥
जो सत बार पाठ कर कोई। छूटहि बंदि महासुख होई॥
जो यह पढै हनुमान चालीसा। होय सिद्धि साखी गौरीसा॥
तुलसीदास सदा हरि चेरा। कीजै हृदय महँ डेरा॥

(दोहा)

पवनतनय संकट हरन, मंगल मूरति रूप॥
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप॥

हे दयामय !

हे दयामय हम सबों को शुद्धताई दीजिए,
दूर करके हर बुराई को भलाई दीजिए ।
ऐसी कृपा और अनुग्रह हम पै हो परमात्मा,
हों सभासद इस सभा के सबके सब धर्मात्मा ॥
हो उजाला सब के मन में ज्ञान के प्रकाश से,
और अंधेरा दूर सारा हो अविद्या नाश से ।
खोटे कर्मों से बचें और तेरे गुण गावें सदा,
छूट जावें दुख सारे सुख सभी पावैं सदा ॥
सारी विद्याओं को सीखें ज्ञान से भरपूर हों,
शुभ कर्म में होवें तत्पर दुष्ट गण सब दूर हों ।
यज्ञ हवन से हो सुगंधित अपना भारतवर्ष देश,
वायु जल सर्वत्र होवें शुद्ध मिट जाएँ क्लेश ॥
धर्म के प्रचार में होवे सभी पुरुषार्थी,
होवे आपस में प्रीति और बने परमार्थी ।
लोभी और कामी क्रोधी कोई भी हममें न हों,
सारे व्यसनों से बचें और छोड़ देवें मोह को ॥
अच्छी संगत में रहें और धर्म मार्ग पर चलें,
तेरे ही होवे उपासक और कुकर्मों से बचें ।
कीजिए हम सब का हृदय शुद्ध अपने ज्ञानसे
मान भक्तों में बढ़ाएँ सबका भक्ति दान से ॥

श्री विष्णु-स्तुति

शान्ताकारं भुजंगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाधारं गगनसदृशं मेघवर्ण शुभांगम ।

लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम् ॥

सशङ्खचक्रं सकिरीटकुण्डलं सपीतवस्त्रं सरसीरुहेक्षणम् ।
सहारवक्षः स्थलकौस्तुभश्रियं नमामि विष्णुंशिरसा चतुर्भुजम् ॥

अशेषसंसारविहारहीनम् आदित्यगं पूर्णसुखाभिराममं ।
समस्तसाक्षिं तमसः परस्तान्नारायणं विष्णुमहं भजामि ॥

नारायणं नमस्कृत्य नरं चैव नरोत्तमम् ।
देवीं सरस्वती व्यासं ततो जयमुदीरयेत् ॥

करारविन्देन पदारविंदं मुखारविन्दे विनिवेशयन्तम् ।
वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि ॥

रामा राम भद्राय रामचन्द्राय वेधसे ।
रघुनाथाय नाथाय सीतायाः पतये नमः ॥

वसुदेवसुतं देवं कंस चाणूर मर्दनम् ।
देवकी परमानन्द कृष्णं वन्दे जगद् गुरुम् ॥

श्रीकृष्ण–स्तुति

करारविन्देन पदारविन्दुं मुखारविन्दे विनिवेषयन्तम् ।
वटस्य पत्रस्य पुटे शयानं, बालं मुकुन्दं मनसा स्मरामि ॥

श्रीकृष्ण गोविन्द हरे मुरारे, हे नाथ नारायण वासुदेव ।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव, गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

विक्रेतुकामा किल गोपकन्या, मुरारि पादार्पित चित्तवृत्ति ।
दध्यादिक मोहवशादवोचद्, गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

गृहे गृहे गोपवधु कदम्बा, सर्वे मिलित्वा समवाप्य योगम् ।
पुण्यानि नामानि पठन्ति नित्यं, गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

सुखं शयाना निलयेनिजेऽपि, नामानि विष्णोः प्रवदन्ति मर्त्या ।
ते निश्चितं तन्मयतां व्रजन्ति, गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

जिह्वे सदैवं भज सुन्दराणि नामानि कृष्णस्य मनोहराणि ।
समस्त भक्तार्ति विनाश नामि गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

सुखावसाने इदमेव सारं दु:खावसाने इदमेव ज्ञेयम् ।
देहावसाने इदमेव जाप्य गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

श्री कृष्ण राधावर गोकुलेश गोपाल गोवर्धननाथ विष्णो ।
जिह्वे पिबस्वामृतमेतदेव गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

जिह्वे रसज्ञे मधुर प्रिये त्वं सत्यं हितं त्वां परं वदामि ।
अवर्णमेय मधुराक्षराणि गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

त्वामेव याचे–मम देहि जिह्वे समागते दण्डधरे कृतान्ते ।
वक्तव्यमेवं मधुरं सुभकत्या गोविन्द दामोदर माधवेति ॥

श्री जगदीश्वर

ॐ जय जगदीश हरे, प्रभू ! जग जगदीश हरे ।
भक्त जनों के संकट छिन में दूर करे ॥
जो ध्यावै फल पावै, दुख बिनसे मन का ।
सुख–सम्पति घर आवै, कष्ट मिटै तन का ॥ ॐ ॥
मात–पिता तुम मेरे, शरण गहूँ किसकी ।
तुम बिनु और न दूजा, आस करुँ जिसकी ॥
तुम पूर्न परमात्मा, तुम अन्तर्यामी ।
पार–ब्रह्म परमेश्वर–तुम सबके स्वामी ॥ ॐ ॥
तुम करुणा के सागर तुम पालन–कर्ता ।
मैं मूरख खल कामी, कृपा करो भर्ता ॥
तुम हो एक अगोचर, सबके प्राण पति ।
किस विधि मिलूँ दयामय ! तुमको मैं कुमती ॥
दीन–बन्धु दुख हरता, तुम ठाकुर मेरे ।
अपने हाथ उठावो, द्वार पड़ा तेरे ॥ ॐ ॥
विषय–विकार मिटाओ, पाप हरो देवा ।
श्रद्धा–भक्ति बढ़ाओ, संतन की सेवा ॥

तन–मन–धन प्रभू, सब कुछ है तेरा।
तेरा तुझको अर्पण क्या लागे मेरा॥
श्याम–सुन्दर जी की आरती जो कोई नर गावे।
भाव भक्ति श्रद्धा से, मनवाच्छित फल पावे॥

शालिग्राम–स्तुति

प्रातः समय उठि मंजन करके प्रेम सहित स्नान कराऊँ।
धूप दीप तुलसी की माला धूप–दीप–पुष्पन की माला।
वर्ण–वर्ण का पुष्प चढ़ाऊँ॥ शालिग्राम सुनो०
शालिग्राम सुनो मोरी विनती, यो वरदान दया कर पाऊँ।
आप विराजो प्रभु रत्न सिंहासन झालर शंख मृदंग बजाऊँ।
एक बूँद चरणामृत लेकर, एक बूँद पंचामृत लेकर।
कुटुम्ब सहित वैकुण्ठ पठाऊँ॥ शालिग्राम सुनो०
जो कुछ आहार मिले प्रभु मोको भोग लगाकर भोजन पाऊँ।
जो कुछ पाप कियो काया से जो कुछ पाप कियो मनस्या से।
दे दे परिक्रमा शीश नवाऊँ॥ शालिग्राम सुनो०
छप्पन भोग छतीसू मेवा प्रेम सहित प्रभु आपको जिमाऊँ।
पनवाड़ो भक्ताँनै दीजो पनवाड़ो संता ने दीजो।
बैठे बैठे हरि गुण गाऊँ॥ शालिगाम्र सुनो०
शरणागत मोह भवसागर को यम के द्वारे सांवरा मैं नहीं जाऊँ।
माधवदास कहे कर जोड़े तुलसीदास आशा रघुवर की।
हर्ष निरख प्रभु थारौं गुण गाऊँ॥ शालिग्राम सुनो०

शिव–स्तुति

नागेन्द्रहाराय त्रिलोचनाय, भस्मांगरागयाय महेश्वराय।
दिव्याय देवाय दिगम्बराय, तस्मै नकाराय नमः शिवाय॥

ॐ मातंत्र चर्माम्बरभूषणाय, गिरीश देवाय घनार्चिताय।
त्रैलोक्यानाथाय त्रिपुरान्तकाय, तस्मै मकसाय नमः शिवाय॥

शिवामुखांभोज निकासनाय, दक्षस्य यज्ञस्य विध्वस्नाय ।
चंद्रार्कथेश्यानरलोचनाय, तस्मै शिकाराय नमः शिवाय ॥

वशिष्ठ कुमोद्रव गौतमाय, मुनीन्द्र वेद्याय गिरीशराय ।
श्री नीलकंठाय वृषभध्वनीय, तस्मै वक्रराय नमः शिवाय ॥

यज्ञस्वरूपाय जटाधराय, पिनाक हस्ताय सनातनाय ।
नित्याय शुद्धाय निरंजनाय, तस्मै वकाराय नमः शिवाय ॥

श्रीहनुमत्-स्तुति

(सो०) प्रनवऊँ पवनकुमार खल बन पावक ग्यानघन ।
जासु हृदय आगार बसहिं राम सर चाप धर ॥

अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं
दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।
सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं
रघुपतिप्रियभक्तं वाताजातं नमामि ॥

गोष्पदीकृतवारीशं मशकीकृतराक्षसम् ।
रामायणमहामालारत्नं वन्देऽनिलात्मजम् ॥

अञ्जनानन्दनं वीरं जानकीशोकनाशनम् ।
कपीशमक्षहन्तारं वन्दे लंकाभयंकरम् ॥

उल्लंघय सिन्धोः सलिलं सलीलं
यः शोकवह्नि जनकात्मजायाः ।
आदाय तेनैव ददाह लंकां
नमामि तं प्राञ्जलिराञ्जनेयम् ॥

मनोजवं मारुततुल्यवेगं जितेन्द्रियं बुद्धिमतां वरिष्ठम् ।
वातात्मजं वानरयूथमुख्यं श्रीरामदूतं शरणं प्रपद्ये ॥

आञ्जनेयमतिपाटलाननं काञ्चनाद्रिकमनीयविग्रहम् ।
पारिजाततरुमूलवासिनं भावयामि पवमाननन्दनम् ॥

यत्र यत्र रघुनाथकीर्तनं तत्र तत्र कृतमस्तकाञ्जलिम् ।
वाष्पवारिपरिपूर्णलोचनं मारुतिं नमत राक्षसान्तकम् ॥

श्री सूर्य-स्तुति

आदित्यः सविता सूर्यः खग पूषा गर्भस्तिमान ।
सुवर्णस्तपनो भानुः स्वर्ण रेता दिवाकरः ॥

तदेवाग्नि स्तदादित्य स्तद्वायुस्तदु चन्द्रभाः ।
तदेव शुक्रं तद् ब्रह्मता आपः स प्रजापतिः ॥

नमोस्तु सूर्याय नमोस्तु मानवे नमोस्तु वैश्वागर जातवेदसे ।
ममतदर्घ्यं प्रतिगृहण देव देवाधिदेवाय नमो नमस्ते ॥

नमः सवित्रे जगदेक चक्षुषे जगतत्वप्रसूति स्थिति नाश हेतवे ।
त्रयी भयाय त्रिगुणात्भधारिणे विरंचि नारायण शङ्करात्मनो ।

श्री दत्त-स्तुति

आदौ ब्रह्मा मध्ये विष्णुरन्ते देवो सदाशिव ।
मूर्तित्रय स्वरूपाय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥

अवधूत सदानन्दं पर ब्रह्मस्वरूपिणे ।
विदेहदेह रूपाय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥

सत्यरूप सदाचार सत्यधर्म परायण ।
सत्याश्रय परोक्षाय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥

जटाधरं पाण्डुरंग शूलहस्तं कृपानिधि ।
सर्व रोग हरं देवं दत्तात्रेय महं भजे ॥

जगदुत्पत्तिकर्त्रे च स्थितिसंहारहेतवे ।
भवपाशवितुक्ताय दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥

जराजन्म विनाशाय देहशुद्धि कराय च ।
दिगम्बर दयामूर्ते दत्तात्रेय नमोऽस्तु ते ॥

श्रीबदरीनाथ–स्तुति

पवन मंद सुगंध शीतल, हेममन्दिर, शोभितं ।
निकट गंगा बहत निर्मल, श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥१॥

शेष सुमिरन करत निशिदिन ध्यान धरत महेश्वरं ।
श्री बेद ब्रह्मा करत स्तुति श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥२॥

इन्द्र चन्द्र कुबेर दिनकर, धूप दीप निवेदितं ।
सिद्ध मुनिजन करत जय जय, श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥३॥

शक्ति गौरि गणेश शारद, नारद मुनि उच्चारणं ।
योग ध्यान अपार लीला, श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥४॥

यक्ष किन्नर करत कौतुक, गान गन्धर्व प्रकाशितं ।
श्रीभूमि लक्ष्मी चंवर डोलैं, श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥५॥

कैलास में एक देव निरंजन, शैल–शिखर महेश्वरं ।
राजा युधिष्ठिर करत स्तुति, श्रीबद्रीनाथ विश्वम्भरम् ॥६॥

श्रीबद्रीनाथ (जी) की परम स्तुति यह पढ़त पाप विनाशनं ।
कोटि–तीर्थ सुपुण्य सुन्दर सहज अति फलदायकम् ॥७॥

श्री राणी सती दादी की स्तुति

हो रही जय–जयकार, दादीजी थारे मन्दिर में,
कर जोर करे अरदास, दादीजी थारे मन्दिर में।
झूंझणूं नगर में आप विराजो, महिमा अमित अपार।
ऊँचा शिखर बना मन्दिर का, ध्वजा रही फहराय।
रतन जड़ित सिंहासन सोहे, ऊपर छत्र हजार।
माथे पर थारे टीको सोहे, सिर पर मुकुट हजार।
अंग कसूमल कबजो सोहे, गल हीरा को हार।
कानाँ में थारे कुण्डल सोहैं, लाल चूड़ो थारे हाथ।

बाँया में थारे बाजूबन्द सोहे, महंदी की लग रही बहार ।
थारे हाथ में ।

सिर पर तो थारै चुनड़ी सोहे माँय ताराँ को जाल ।
दादी जी थारी चूनड़ में ।

खीर पूड़ी और पैड़ा नारियल मोदक भर भर थाल ।
शंख मृदंग नगारा बाजे झाँझर की झनकार ।
भादों मास मेला लागे दुनिया आवे बेसुमार ।
जात जड़ूला करता कोई, कोई करे जय जयकार ।
कोई मांगे पुत्र, और तारो किसी की नैया पड़ी मझदार ।
अन्धे को अँखियाँ कोढ़ी को काया, बांझन दो कुमार ।
महर की अँखिया यदि हो जावे नैया होवे पार ।
उपमा को कुछ अन्त नहीं है, जाऊँ मैं बलिहार ।
ये सब भक्त शरण आये हैं करदो बेड़ा पार ।
सब सेवक माँ अरज करत है हरलो भूमि का भार ।
हो रही जय जयकार दादीजी थारे मन्दिर में ।

मनोकामना

इतना तो करना स्वामी, जब प्राण तन से निकले ।
गोविन्द नाम लेकर, फिर प्राण तन से निकले ॥

श्री गंगाजी का तट हो, यमुना का बंसी-बट हो ।
मेरे साँवरा निकट हो, जब प्राण तन से निकले ॥

श्री वृन्दावन का स्थल हो, मेरे मुख में तुलसी-दल हो ।
विष्णु-चरण का जय हो, जब प्राण तन से निकले ॥

सन्मुख साँवरा खड़ा हो, मुरली का स्वर भरा हो ।
तिरछा चरण धरा हो, जब प्राण तन से निकले ॥

सिर सोहना मुकुट हो, मुखड़े पै काली लट हो ।
यही ध्यान मेरे घट हो, जब प्राण तन से निकले ॥

केसर–तिलक हो आला, मुख चन्द्र–सा उजाला।
डालूँ गले में माला, जब प्राण तन से निकले॥

कानों जड़ाऊँ बाली, लटकी लटें हों काली।
देखूँ छटा निराली, जब प्राण तन से निकले॥

पीताम्बरी कसी हो, होठों पै कुछ हँसी हो।
छवि ये ही मन बसी हो, जब प्राण तन से निकले॥

पचरंगी काछनी हो, पट–पीत सेतनी हो।
मेरी बात सब बनी हो, जब प्राण तन से निकले॥

पग धो तृषा मिटाऊँ, तुलसी का पत्र पाऊँ।
सिर चरण रज लगाऊँ, जब प्राण तन से निकले॥

आना अवश्य आना, राधे को साथ लाना।
दर्शन मुझे दिखाना, जब प्राण तन से निकले॥

जब कंठ प्राण आवे, कोई रोग ना सतावे।
यम दरस ना दिखावे, जब प्राण तन से निकले॥

मेरा प्राण निकले सुख से, तेरा नाम निकले मुख से।
बच जाऊँ घोर दुःख से, जब प्राण तन से निकले॥

उस वक्त जल्दी आना, नहीं श्याम! भूल जाना।
मुरली धुन सुनाना, जब प्राण तन से निकले॥

सुधि होवे नाहिं तन की, तैयारी हो गमन की।
लकड़ी हो ब्रज के वन की, जब प्राण तन से निकले॥

यह नेंक सी अरज है, मानो तो क्या हरज है।
कुछ आपका फरज है, जब प्राण तन से निकले॥

मिलता है सच्चा सुख

मिलता है सच्चा सुख केवल, भगवान तुम्हारे चरणों में ।
यह विनती है पल छीन की, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥

चाहे वैरी सब संसार बने, चाहे जीवन मुझ पर भार बने ।
चाहे मौत गले का हार बने, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥ १॥

चाहे अग्नि में मुझे जलना हो, चाहे काँटों पे मुझे चलना हो ।
चाहे छोड़ के देश निकलना हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥ २॥

चाहे संकट ने मुझे घेरा हो, चाहे चारों और अँधेरा हो ।
पर मन नहीं डगमग मेरा हो, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥ ३॥

जिह्वा पर तेरा नाम रहे, तेरा ध्यान सुबह और शाम रहे ।
तेरी याद तो आठों याम रहे, रहे ध्यान तुम्हारे चरणों में ॥ ४॥

हे प्रभो आनन्ददाता

हे प्रभो आनन्ददाता ! ज्ञान हमको दीजिए ।
शीघ्र सारे दुर्गुणों को दूर हमसे कीजिए ॥

लीजिए हमको शरण में, हम सदाचारी बनें ।
ब्रह्मचारी, धर्मरक्षक, वीर व्रतधारी बनें ॥

हे भक्तवत्सल ईश, तुमको बार-बार प्रणाम है ।
सर्वेश मंगल कीजिए, शंकर तुम्हारा नाम है ॥

भजनावली

तेरे पूजन को भगवान

तेरे पूजन को भगवान, बना मन मन्दिर आलीशान।
किसने जानी तेरी माया, किसने भेद तुम्हारा पाया।
हारे ऋषि-मुनी धर ध्यान, बना मन मन्दिर आलीशान॥

तू ही जल में, तू ही थल में, तू ही मन में, तू ही बन में।
तेरा रूप अनूप महान, बना मन मन्दिर आलीशान॥

तू हर गुल में, तू बुलबुल में, तू हर डाल के हर पातन में।
तू हर दिल में मूरतिमान, बना मन मन्दिर आलीशान॥

तूने राजा रंक बनाये, तूने भिक्षुक राजा बैठाये।
तेरी लीला परम महान, बना मन मन्दिर आलीशान॥

झूठे जग की झूठी माया, मूरख इसमें क्यों भरमाया।
कर कुछ जीवन का कल्यान, बना मन मन्दिर आलीशान॥

सब दिन होत न एक समान

सब दिन होत न एक समान

एक दिन राजा हरिचंद्र गृह, संपत्ति मेरु समान।
एक दिन जाय स्वपय गृहसेवत, अंबर हरत मसान॥ सब०

एक दिन दूलह बनत बराती, चहुँ दिशि गढत निसान।
एक दिन डेरा होत जंगल में, कर सूंघे पगतान॥ सब०

एक दिन सीता रुदन करत है, महा बिपिन उद्यान।
एक रामचंद्र मिले दोउ, विचरत पुष्प विमान॥ सब०

एक दिन राजा राज युधिष्ठिर, अनुचर श्री भगवान ।
एक दिन द्रौपदी नगन होत है, चीर दुःसाशन तान ॥ सब०

गर्व कियो नर हार्यो

गर्व कियो सोई नर हार्यो ।
सीयारामजी सें गर्व कियो सोई नर हार्यो ॥
गर्व कियो राजा हिरण्यकश्यपुए,नोर वधारी ने मार्यो ।
हां हां रे प्रभु, नोर वधारी ने मार्यो ॥ सीयारामजी से०
गर्व कियो लंकापति रावणे, चूरचूरा करी डार्यो ।
हां हां रे प्रभुए चुरचुरा करी डार्यो ॥ सीयाराम से०
गर्व कियो श्रीरत्नाकर सागरे, नीर खारो करी डार्यो ।
हां हां रे प्रभुए, नीर खारो करी डार्यो ॥ सीयाराम जी से०
गर्व कियो चकवा चकवीए, रेन वछूट करी डार्यो ।
हां हां रे प्रभुए रेन वछूट कर हार्यो ॥ सीयाराम से०
गर्व कियो अंगनी केरे पुत्रे, पाँव खोड़ो करी डार्यो ।
हां हां रे प्रभुए पाँव खोड़ो करी डार्यो ॥ सीयाराम से०
गर्व कियो सिंहलद्वीप के सौंधीए बाल बाँकों करी डार्यो ।
हां हां रे प्रभुए बाल बाँको करी डार्यो ॥ सीयाराम से०
कहे तुलसीदास आश रघुवर की, शरण आव्यो तेने तार्यो ।
हां हां रे प्रभुए शरण आव्यो तेने तार्यो ॥ सीयाराम से०

देख तमाशा लकड़ी का

हे लकड़ी ! तू बन लकडी, अब देख तमाशा लकड़ी का ।
गर्भवास से बाहर निकला, झूल पालना लकड़ी का ।
पाँच वर्ष की उम्र हुई तब हाथ खिलौना लकड़ी का ।

बीस बरस की उम्र भई, तैयारी हुई ब्याह करने की ।
बाँध सेहरा घोड़ी चढ़ गया, तोरन मारा लकड़ी का ॥

चालीस बरस की उमर हुई तो फिकर लगी है बुढ़ापे की ।
साठ बरस की उमर हुई तब हाथ सहारा लड़की का ॥

अस्सी बरस की उमर हुई तैयारी हुई अब चलने की ।
चार जना मिल तुझे उठाया विमान बनाया लड़की का ॥

गंगा तट पर जाकर रखा, स्नान कराया गंगा का ।
नीचे लकड़ी ऊपर लकड़ी, चिता बनाया लकड़ी का ॥

आधम आध शरीर जला, तब ठोकर मारा लकड़ी का ।
होरी जैसे फूँक दिया फिर, टुकड़ा डाला लकड़ी का ॥
ढोलक लकड़ी, बाजा लकड़ी, सितार बना है लकड़ी का ।
हे लकड़ी ! तू बन लकड़ी, अब देख तमाशा लकड़ी का ॥

दो दिन का मेला

दो दिन का जग में मेला, सब चला–चलीका खेला । दो०
कोई खड़ा तैयार अकेला, सब चला चलीका खेला ॥
कर पाप कपट छल माया, धन लाख करोड कमाया ।
संग चले न एक अधेला, सब चलीका खेला । दो०
सुत नार मात पितु भाइ, कोई अंत सहायक नाहि ।
क्यों भरे पाप का थेला, सब चला चलीका खेला । दो०
यह नश्वर सब संसारा, कर भजन इश का प्यारा ।
ब्रह्मानंद समज मन चेला ! सब चला चलीका खेला । दो०

जिन मुख से

जिन मुखसे सियाराम न सुमरे मुख में तो धूल परी रे
धिक् तेरो जनम जीवन तरो, धिक् धिक् मनुष्यन की देह धरी रै ।
जीवत तात मूके कौं तेरा, क्युं जनम्यो तू पाप करी रै ॥

रामनाम बिन रसना कैसी ? करो उनकी टुकडाटुकडी रे ।
जिन नेनन में प्रभुरूप न नीरख्यो, उन नेन में लूण भरी रे ॥
रतन् पदारथ जनम मनखा, आवत नहीं सो फरी फरी रे ।
अब तेरो पाप बन्यो हे मूरख, करना होय सो लिने करी रे ॥
हाथ पसार कियो नहीं सुकृत, तप तीरथ कछु डग ना भरी रे ।
खेम कहे तू भूल्यो आयो, खाली तेरी खेप पड़ी रे ॥

माटी कहे कुम्हार को

माटी कहे कुम्हार को, तू क्या रौंदे मोहे ।
एक दिन अैसा आयेगा, मैं रौदूंगी तोहे ॥
आये है सौ जायेंगे, राजा रंक फकीर ।
एक सिंहासन चढ़ी चले, एक बंधे झंझीर ॥ माटी कहे०
दूर्वल को न सताईए, ताकि मोटी हाय ।
बिना जीव के श्वास सों, लोहा भसम होई जाय ॥
चलती चाकी देख के, दिया कबीरा रोय ।
दो पाटन के बीच में, बाकी बचा न कोई ॥ माटी कहे०
दुःख में सुमीरन सब करे, सुख में करे न कोई, ।
जो सुख में सुमीरन करे, दुःख काहे को होय ॥
पत्ता तूटा डाली से, ले गई पवन उडाई ।
अबके बिछड़े कब मीलेंगे, दूर पड़ेंगे जाई ॥
कबीर आप ठगाइए और न ठगिये कोई ।
आप ठगे सुख उपजे, और ठगे दुःख होई ॥ माटी कहे०

तुम मेरे प्रभु

तुम मेरे प्रभु मैं तुम्हारा, कैसे टूटेगा नाता हमारा ॥
तू चन्दा हरि मैं चकोरा, घनघोर घटा तू मैं भोरा ।
सदा देखुं मैं राह तुम्हारा, कैसे टूटेगा नाता हमारा ॥

मैं हूँ दीपक प्रभु तुम हो बाती, मेरे जीवन के प्यारे हो साथी ।
बिना तेरे न हो उजियारा, कैसे टूटेगा नाता हमारा ॥
मैं हूँ मछली हरि तुम हो पानी, मैं हूँ मंगता मगर तुम हो दानी ।
बिना तेरे न कोई हमारा, कैसे टूटेगा नाता हमारा ॥
मैं हूँ नैना हरि तुम हो ज्योति, मैं हूँ सीपी हरि तुम हो मोती ।
मेरे जीवन को तेरा सहारा, कैसे टूटेगा नाता हमारा ॥

श्याम का दर्शन

ऐसी लागी लगन ऐसी लागी लगन–२
ऐसी लागी लगन मीरा हो गई मगन–२ ।
वो तो गली गली हरि गुण गाने लगी
ऐसी लागी लगन मीरा हो गई मगन–२ ॥
महलों में पली वन में जोगन चली–२ ।
मीरा रानी दीवानी कहाने लगी
ऐसी लागी लगन मीरा हो गई मगन–२ ॥
राजा ने विष दिया, मानो अमृत पिया–२ ॥
मीरा सागर में सरिता समाने लगी
दुःख लाखो सहे मुख से गोविन्द कहे ॥
मीरा गोविन्द गोपाल गाने लगी ।
बैठी संतो के संग रंगी मोहन के रंग
मीरा प्रेमी प्रीतम को मनाने लगी ।
बैठी संतो के संग मीरा प्रेमी प्रीतम
वो तो गली गली हरि गुण गान लगी ॥

जाग मुसाफिर

जाग मुसाफिर देख जरा, वो तो कूच की नौबत बाज रही ।
सोवत सोवत बीत गई, सब रात तुझे परभात भई ।
सब संग के साथी तो लाद गये, तेरे नैनन नींद विराज रही ॥

कोईआज गये, कोईकाल गये, कोई जावन काज तैयार खड़ा ।
नहीं कायम कोई मुकाम यहाँ, चरकाल से ये ही रिवाज रही ॥
इस देशमें चोर चकोर घने, निज माल की राख संभाल सदा ।
बहु ते हुशियार लूंटाय गये, नहीं कोई की साबत लाज रही ॥
अब तो तज आलस को मन से, कर संग समान तैयार सभी ।
ब्रह्मानंद न देर लगाय जरा, बिजली शिर पर गाज रही ॥

मन फूला फूला फिरे

मन फूला फूला फिरे जगत में, कैसा नाता रे ।
माता कहे ए पुत्र हमारा, बहन कहे ए वीरा मेरा ।
भाई कहे भुजा हमारी, नारी कहे ए नर मेरा ॥मन०
पेट पकड़ के माता रोवे, बाँय पकड़ी के भाई ।
लुपट सुपट के तरियाँ रोवे, हंस अकेला जाई रे ॥मन०
जूबे तब लग माता रोवे, बहन रोवे दस मसाई ।
तेरा दिन तक तिरियाँ रोवे, फिर करे घर बाताँ रे ॥मन०
चार गजू का गज मंगाया, चडा काष्ठ की घोड़ी ।
चारों कोने आग लगाई, फूँक दीयो जस होली रे ॥मन०
हाड़ जले जैसे लकड़ी ने केस जले जैसे घास रे ।
सोना जैसी काया जल गई, कोई न आयो पासा रे ॥मन०
घर की तिरियाँ देखन लागी, ढूँढ फिरियो भाई ।
कहत कबीरा सुनो भाई साधु, छोड़ो जग की आशा रे ॥मन०

ऐसी लागी लगन

हैं आँख वो–२ जा श्याम का दर्शन किया करे–२ ।
है शिष्य जो प्रभु चरण में वंदन किया करे ॥
बेकार वो मुख है–२ जो रहे व्यर्थ वातों में–२ ।
मुख वो है जो हरिनाम का सुमिरन किया करे ॥

हीरे मोती से नहीं शोभा है हाथ की।
है हाथ जो भगवान का पूजन किया करे॥
मर कर भी अमर नाम उस जीव का जग में।
प्रभु प्रेम में बलिदान जो जीवन किया करे॥

मैं नहीं माखन खायो

मैया मोरी मैं नहीं माखन खायो।
भोर भये गैयन की पीछे, मधुवन मोहि पठायो।
चार पहर बंसीबन भटक्यो, सांझ परे घर आयो॥

मैं बालक बहिंअन को छोटो, छीको केहि बिधि पायो।
ग्याल-बाल सब ख्याल परे है, बरबस मुख लपटायो॥

तू जननी मन की अति भोरी, इनके कहे पतियाये।
जिय तेरे कछु भेद उपजा है, जानि परायो जायो॥

यह ले अपनी लकुट कमरिया, बहुत हि नाच नचायो।
'सुरदास' तब विहंसी जसोदा, उर कंठ लगायो॥

तीरथ कहाँ जाना

तीरथ कहाँ जाना, मेरे भाई (२)
घट में गंगा, घट में जमुना, घट में सरस्वती माई।
बाहिर सब जग पथ्थर पानी, भटक भटक घर आई॥ तीरथ०

दिन दिन भट का रात नगाया, तबहि न मीला सांई।
नेक कमाई कर के माई, इस में सब कुछ आई॥ तीरथ०

मन में मक्का मन में काशी, मन में सोलम भाई।
आतम गंगा मलमल न्हाई, जन्म-मरण मिट जाई॥ तीरथ०

मनमाला दिन रैन चलाई, सोहं सोहं एहि।
अंत समे बिन हरनी भाई, कोई काम न आई॥ तीरथ०

रंग रंग के कपड़े पहने, दाढी मूछ मुंडाई ।
जटा बढाई, भभूत लगाई, ये सब जग ठगवाई ।। तीरथ०

धन धन भोला नाथ

धन धन भोला नाथ, बाँट दिये तीन लोक एक पल भर में ।
ऐसे दीन दयाल हो दाता, कौड़ी नहीं रखी घर में ।।
प्रथम दिया ब्रह्मा को वेद वो बना वेद का अधिकारी ।
विष्णु को दे दिया चक्र सुदर्शन लक्ष्मी सी सुन्दर नारी ।।
इन्द्र को दे दी कामधेनु और ऐरावत सा बलकारी ।
कुबेर को सारी बसुधा का कर दिया तुमने भंडारी ।।
अपने पास पात्र नहीं रखा था केवल खप्पर कर में ।
ऐसे दीन दयाल हो दाता कौड़ी नहीं राखी घर में ।।
अमृत तो देवताओं को दिया और आप हलाहल पान किया ।
ब्रह्म ज्ञान दे दिया उसे जिसने कुछ तुम्हारा ध्यान किया ।।
भागीरथ को गंगा दे दी सब जग ने स्नान किया ।
बड़े बड़े पापियों का तुमने एक पल में कल्याण किया ।।
आप नशे में चूर रहो और पियो भांग नित खप्पर में ।
ऐसे दीन दयाल हो दाता कौड़ी नहीं रखी घर में ।।
रावण को लंका दे दी और बीस भुजा दस शीश दिये ।
रामचन्द्र को धनुष बाण और हनुमंत को जगदीश दिये ।।
मनमोहन को मोहनी दे दी और मुकुट तुम ईश दिये ।
मुक्ति हेतु काशी में वास भक्तो को चिश्वा वीश दिये ।।
अपने तन पर वस्त्र ना राखो मगन रहो वाघ्रम्बर में ।
ऐसे दीन दयाल हो दाता कौड़ी नहीं रखी घर में ।।
नारद को दई बीन और गन्धर्वो को राग दिया ।
ब्राह्मण को दिया कर्मकाँड और संन्यासी को त्याग दिया ।
जिस पर तुम्हारी कृपा हुई उसको तुमने अनुराग दिया ।।

जिसने पाया उसीने दिया महादेव तुम्हारे कर में।
ऐसे दीन दयाल हो दाता कौड़ी नहीं रखी घर में॥

अब सौंप दिया

अब सौंप दिया इस जीवन का सब भार तुम्हारे हाथों में।
हे जीत तुम्हारे हाथों में और हार तुम्हारे हाथों में॥

मेरा निश्चय बस एक यही, एक बार तुम्हें पा जाऊँ मैं।
अर्पण कर दूँ दुनिया भर का, सब प्यार तुम्हारे हाथों में॥

जो जग में रहूँ तो ऐसे रहूँ ज्यों जल में कमल का फूल रहे।
मेरे सब गुण, दोष समर्पित हो, भगवान तुम्हारे हाथों में॥

यदि मानव का मुझे जन्म मिले तो तव चरणों का पूजारी बनूँ।
इस पूजक की एक-एक रग का हो तार तुम्हारे हाथों में॥

जब जब संसार का कैदी बनूँ, निष्काम भाव से कर्म करूँ।
फिर अन्त समय में प्राण तजूँ साकार तुम्हारे हाथों में॥

मुझमें तुझमें बस भेद यही, मैं नर हूँ, तुम नारायण हो।
मैं हूँ संसार के हाथों में, संसार तुम्हारे हाथों में॥

हनुमान का वार है

आज मंगलवार है हनुमान का वार है वह सच्चा दरबार है।
सच्चे मन से जो कोई ध्यावे, उसका बेड़ा पार है॥

चैत्र सुदी पूनम मंगल को, जन्म वीर ने पाया है।
लाल लंगोटा गदा हाथ में, सिर पर मुकुट सजाया है।
शंकर का अवतार है, हनुमान का वार है॥

ब्रह्माजी से ब्रह्म ज्ञान का, वक्त बल भी तुमने पाया है।
राम काज शिव शंकर ने, बानर का रूप धराया है।
लीला-अपरम्पार है, हनुमान का वार है॥

बालापन में हनुमान ने, हरदम ध्यान लगाया है ।
शाप दिया ऋषियों ने तुम को बल का ध्यान भुलाया है ।
रामनाम आधार है हनुमान का वार है ॥

राम नाम जब हुआ अयोध्या, कैसा नाच नचाया है ।
कहा राम ने लक्ष्मण से, यह बानर मन को भाया है ।
राम चरण से प्यार है, हनुमान का वार है ॥

पंचवटी से सीता को, रावण जब लेकर आया है ।
लंका में जाकर तुमने माता का पता लगाया है ।
अक्षय को दिया मार है, हनुमान का वार है ॥

लंका जलाई आपने, रावण भी घबराया है ।
श्री राम लखन को आन कर, सीता संदेश सुनाया है ।
सीता शोक अपार है, हनुमान का वार है ॥

शक्ति बाण लग्यो लक्ष्मण के बूटी लेने धाये है ।
लाकर बूटी लक्ष्मण जी के, तुमने प्राण बचाये है ।
राम लखन का प्यार है, हनुमान का वार है ॥

राम चरण में हनुमान ने, हरदम ध्यान लगाया है ।
राम तिलक में हनुमान ने सीना फाड़ दिखाया है ।
सीने में राम दरबार है, हनुमान का वार है ॥

सीताराम कहिए

सीताराम सीताराम सीताराम कहिए ।
जाही विधि राखै राम, ताहि विधि रहिए ॥ ध्रुव०
मुख में हो राम नाम, राम सेवा हाथ में ।
तू अकेला नाहीं प्यारे, राम तेरे साथ में ।
विधि का विधान जान, हानि-लाभ सहिए ॥ जाही०

किया अभिमान तो फिर मान नहीं पायेगा ।
होगा प्यारे वही जो राम जी को भायेगा ।
फल आशा त्याग, शुभ काम करते रहिए ॥ जाही०

जिन्दगी की डोर सौंप, हाथ दीनानाथ के।
महलों में राखे चाहे झोपड़ी में वास दे।
धन्यवाद निर्विवाद राम राम कहिए ॥ जाही०

आशा एक राम जी से दूजी आशा छोड़ दे।
नाता एक राम जी से दूजा नाता तोड़ दे।
साधू – संग राम – रंग अंग – अंग रंगिए।
काम – रस त्याग प्यारे, राम – रस पगिए ॥ जाही०

मेरे राम गाड़ीवाले

कोई धीरे गाड़ी हांको रे, मेरे राम, गाड़ीवाले।
गाड़ी है अजब रंगीली, बेल जोड्या दो–चार।
हांकनवाला छेल छबला, बैठनेवाला लाला ॥ कोई०

गाड़ी पड़ी है रेत में, ने मझल पड़ी है दूर।
सदा सद्गुरु जो मीले, तो पहोंचावे हूजूर ॥ कोई०

घोड़ा छूट्या स्थान से, ने पीछे पड्यो पोकार।
दस दरवाजा बंध हुआ, और नीकल गयाअसवार ॥ कोई०

जंतर मारुं झांझवुं, तूटी गया बहु तार।
जंतर बिचारा क्या रे, भाई गया बजावन हारा ॥ कोई०

गंगा किनारे घर करो ने ता हो निर्मण नीर।
भजन विना नव पामिए, कह गये दास कबीर ॥ कोई०

म्हाँ ने चाकर राखो

म्हाँ ने चाकर राखो जी,
गिरिधारी लाला! चाकर राखो जी, (२)।
चाकर रहसूं, बाग लगासूं, नित उठ दरसन पासूं।
वृंदावन की कूंज गलिन में गोविंद लीला गासूँ ॥ म्हाँने०

चाकरी में दरसन पाऊँ सुमिरन पाऊँ खरची ।
भाव–भगति जगीरी पाऊँ, तीनों बातों सरसी ॥ म्हाँने०

मोर–मुकुट पीताम्बर सोहे, गल बैजंती माला ।
वृंदावन में धेंनु चरावे, मोहन मुरलीवाला ॥ म्हाँने०

ऊँचे ऊँचे महल बनाऊँ, बिच बिच राखुं बारी ।
सांवरिया के दरसन पाऊँ, पहिर कसुंबी सारी ॥ म्हाँने०

जोगी आया जोग करनकूँ तप करने संन्यासी ।
हरि–भजन कूं साधु आये, वृन्दावन के वासी । म्हाँने०

मीरां के प्रभु गहिर गंभीरा, हदे रहो जी धीरा ।
आधी रात प्रभु दरसन दीन्हों, जमुनाजी के तीर ॥ म्हाँने०

तेरे मन में राम मन में राम

राम नाम की लूट है लूट सके तो लूट
अन्त काल पछतायेगा जब प्राण जायेगे छूट
तेरे मन में राम तन में राम–२, रोम रोम मे राम रे
राम सुमिर ले ध्यान् लगा ले, छोड़ जगत के काम के
बोलो राम बोलो राम बोलो राम राम राम रे–२
तेरे मन में राम तन में राम... छोड़ जगत के काम ।बोलो राम०

माया में तू उलझा उलझा दर दर धूल उड़ाये
अब क्यों करता मन भारी जब माया साथ छुड़ाये
माया में तु... अब क्यों करता।

दिन तो बीता दौड़ धूप में ढल जाये ना शाम रे
बोलो राम बोलो राम बोलो राम राम राम–२
तेरे मन में राम... रोम रोम... राम सुमिर...
छोड़ जगत के... बोलो राम... बोलो राम...२

तन के भीतर पाँच लुटेरे डाल रहे है डेरा
काम क्रोध मद लोभ मोह ने तुझको कैसा घेरा
तन के भीतर... काम क्रोध मद...

भूल गया तू राम रतन भूला पूजा का काम रे
बोलो राम बोलो राम बोलो राम राम राम–२
तेरे मन में... रोम रोम... राम सुमिर...
छोड़ जगत के... बोलो राम... बोला राम...२
बचपन बीता खेल खेल में भरी जवानी सोया–२
भरी जवानी सोया, बचपन बीता खेल खेल में...
देख बुढ़ापा अब क्यों सोचे क्या पाया क्या खोयो
बचपन बीता... देख बुढ़ापा...
देर नहीं है अब भी बंदे ले ले उसका नाम रे
बोलो राम बोलो राम बोलो राम राम राम–२
तेरे मन... रोम रोम.... राम सुमिर...
छोड़ जगत के... बोलो राम... बोलो राम...

नाम मेरा हनुमान

नाम मेरा हनुमँत मात अब तुम ना घबराइयो ।
मार के पापी रावण को, हम तुमको ले जाइयो ॥

बैठ अकेले रामचन्द्र जी तुमरा ध्यान लगाते हैं २
कुछ उनको नाही भाता है, और मौसम नहीं सुहाता है ॥
विपदा ये कैसी छाई है, बेचैन बहुत रघुराई है ।
जाती ना बात बताई है, एक अँगूठी दीनी मुझको ।
संग में ये लहियो ॥ मार के पापी०

रामचन्द्रजी संग लखन के लंका नगरी आएँगे २
मैं भी तो संग में आऊँगा, रावण को मजा चखाऊँगा ॥
यमपुर में उसे पहुँचाऊँगा, तुमको आजाद कराऊँगा ।
रसवंत में हरदम उनकी सेवा में रहियो ॥ मार०

तो सीता जी ने हनुमान जी से कहा–
मेरी राम जी से राम हनुमान जी कहियो ।
मार के पापी रावण को तुम हमको ले जइयो ॥

सीताराम कहो राधेश्याम कहो

सीताराम कहो राधेश्याम कहो–२
बीती जाये उमरिया रे–२ सीताराम कहो राधेश्याम कहो–२
तूने गर्भ में प्रभु से किया था वादा मैं भजन करूँगा हर लो बाधा
तूने गर्भ में मैं भजन करूँगा . . .
आके भूल गया सुख में फूल गया–२
तेरी पतली नजरिया रे सीताराम कहो राधेश्याम कहो (१)
तूने जोड़ा यहाँ परिवार बड़ा, पाया धन वैभव अधिकार बड़ा
तूने जोड़ा यहाँ पाया धन वैभव, हुआ अभिमानी मति बौरानी–२
चला खोटी डगरिया रे, सीताराम कहो राधेश्याम कहो (२)
जो बीत गया उसे क्या रोना, जब भौर भई तब क्या सोना
जो बीत गया...जब भौर भई...होके प्रेम मगन करले हरि भजन
भरले नैन गगरिया के सीताराम कहो राधेश्याम कहो
बीती जाये उमरिया रे–२ सीताराम कहो राधेश्याम कहो ॥

श्रीरामनाममाल

श्रीराम राम रघुनंदन राम राम
श्रीराम राम भरताग्रज राम राम।
श्रीराम राम रणकर्कश राम राम
श्रीराम राम शरणं मम राम राम ॥

श्रीराम राम भवतारण राम राम
श्रीराम राम अघहारण राम राम।
श्रीराम राम जनरंजन राम राम
श्रीराम राम भवभंजन राम राम ॥

श्रीराम राम रविवंशज राम राम
श्रीराम राम भवभेषज राम राम।
श्रीराम राम अवधेश्वर राम राम
श्रीराम राम परमेश्वर राम राम ॥

श्रीराम राम शिववंदन राम राम
श्रीराम राम रिपुकंदन राम राम।
श्रीराम राम दनुजांतक राम राम
श्रीराम राम नरकांतक राम राम॥

श्रीराम राम धरणीधर राम राम
श्रीराम राम करुणाकर राम राम।
श्रीराम राम मनुजाकृति राम राम
श्रीराम राम कमलापति राम राम॥

श्रीराम राम नरनायक राम राम
श्रीराम राम वरदायक राम राम।
श्रीराम राम गरुडध्वज राम राम
श्रीराम राम मन रे भज राम राम॥

श्री रामायन की आरती

आरती श्रीरामायनजी की कीरति कलित ललित सिय पीकी,
गावत ब्रह्मादिक मुनि नारद, बालमीक बिग्यान बिसारद,
सुक सनकादि सेष अरू सारद, बरनि पवनसुत कीरति नीकी.१

गावत वेद पुरान अष्टदस छओ शास्त्र सब ग्रंथन को रस,
मुनिजन धन संतन को सरबस, सोर अंस संतन सबही की .२

गावत संतत शंभु भवानी अरु घटसंभव मुनि बिग्यानी,
व्यास आदि कबिबर्ज बखानी, काक भुशुडि गरुड के ही की.३

कलि मल हरनि बिषय रस फीकी, सुभग सिंगार मुक्ति जुबती
दलन रोग भव भूरि अमी की, तात मात सब बिधि तुलसी .४

कथा–पूर्णाहुति प्रसंग की स्तुति

कथा विसर्जन होत है, सुनहु वीर हनुमान ।
राम लखन जानकी, सदा करो कल्यान ॥

एक घडी आधी घडी, आधी में पुन आध ।
तुलसी संगत संत की, कटे कोटि अपराध ॥

वाजा वाग्या विविधना, भरदाज के पास ।
सब देवता आश्रम गये, शंभु गये कैलास ॥

रामकथा अधदाहिनी जो घर चर्चा होत ।
कहतु सुनत नित्य यक्षफल, भगसागर के पोत ॥

कामीहि नारी पियारी जीभ, लोभी के प्रिय दाम ।
तिमी रघुनाथ निरंतर, प्रिय लगाही मम राम ॥

शिवजी कथा के अंत में, लीजे रघुवीर नाम ।
एक बार सहु कोई कहे, जय जय सीताराम ॥

सियावर रामचन्द्र की जय, अयोध्या रामलाल की जय ।
उमापति महादेव की जय, पवनसुत हनुमान की जय ॥

रमापति रामचन्द्र की जय, वृंदावन कृष्णचंद्र की जय ।
बोलो भाई सब संतन की जय ॥

समाप्त

फोटो टाइप सेटिंग : न्यू–टेक. फोटो कंम्पोझर, नडियाद
मुद्रक : खतीब किताब घर एन्ड प्रिन्टर्स, अहमदाबाद